IJAER/May-June 2021/Volume-9/Issue-6 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

धर्मवीर भारती की कहानियों और उपन्यासों की कथा संवेदना

डॉ स्मिता गर्ग

कार्यवाहक प्राचार्य एवं एसोसिएट प्रोफेसर

डिगब्बर पीण्जीण् कॉलेज

डिबाई

डॉ भारती दीक्षित

एसोसिएट प्रोफेसर

शहीद मंगल पांडे राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय

मेरठ

सार

कथा लेखन के क्षेत्र में डॉ. धर्मवीर भारती जी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। भारती जी के काव्यसृजन की दिशा प्रगतिवाद एवं प्रयोगवाद के संघर्ष से निर्मित हुई है। उनके सृजन का सर्वाधिक उत्कर्ष का काल प्रयोगवाद और नयी कविता का काल रहा है। वास्तव में रुढ़िमुक्त नये प्रयोगवाद काव्य और कथा साहित्य को मानवतावादी दृष्टि देने वाले भारती जी ने पाठकों के हृदय पर अपनी लेखनी की छाप छोड़ी है। जिसे उन्होंने समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है। धुआं कहानी आज की समाज व्यवस्था को इंगित करती है। "मरीज नंबर सात' में आज के परिवेश में अर्थहीन होते रिश्तों को सूक्ष्मता के साथ उभारा गया है। भारती जी ने कहानियों का कथानक आंतरिक प्रेरणाओं से भी ग्रहण किया है और बाह्य संदर्भो से भी। सरलता एवं स्पष्टता उनकी कहानियों की विशेषता है। भारती जी ने जीवन के सत्य को अंकित करने में कहीं भी बौद्धिकता का आश्रय नहीं लिया यही कारण है कि उनके पाठकों की संख्या अधिक है। वस्तुतः उपन्यास और लघुकथा के बीच लंबी कहानियों की पृथक प्रकृति होती है। इनमें मूल संवेदना गहराती–गहराती इतनी सघन होती जाती है कि पाठकीय चित्त अपने व्यापक बोध परिवेश के साथ रंग जाता है। किन्तु फैशन जीवी लंबी कहानियों में, जिनमें जिये जाते जीवन के नाम पर किसी टेकनीक, किसी फार्मूले का प्रयोग होता है, यह मर्मस्पर्शिता नहीं होती है। इनमें बौद्धिक चमत्कार चाहे जिस तेवर में निकलते चलें पर हृदयस्पर्शिता नहीं होती।1 स्वाभाविकता एवं लोक संक्ति कहानियों का आदि से अंत तक ऐसा कसा हुआ सहज स्वर और संगीत है जो कहानियों को जीवंत बनाता है। यही जीवंतता हमें धर्मवीर भारती के कथा साहित्य में मिलती है।

कुंजी शब्दः *धर्मवीर भारती के उपन्यास, कथा संवेदना*

प्रस्तावना

धर्मवीर भारती जी असाधारण लेखकों में से थे, जिन्होंने अपनी सर्वतोमुखी प्रतिभा से साहित्य की हर विधा को एक नया अप्रत्याशित मोड़ दिया था। कहानियाँ हो, उपन्यास हो या नाटक वे उनमें एक ऐसी ताजा, मौलिक दृष्टि लेकर आये थे, जिसे किसी कलाकार में देखकर अनायास उसके लिए श्जीनियसश शब्द मन में कौंधता है। भारती जी के काव्य सृजन की दिशा प्रगतिवाद एवं प्रयोगवाद के संघर्ष से निर्मित हुई है। वास्तव में रुढ़िमुक्त नये प्रयोगवादी काव्य और कथा–साहित्य को मानवतावादी दृष्टि देने वाले भारती जी ने पाठकों के हृदय पर अपनी लेखनी की छाप छोड़ी है।

भारती जी के कथा–साहित्य में मैंने विशेषतः यह बात लक्षित की। कहानियों और उपन्यासों के इस जीवन व्यापार को देखकर मैंने ष्धर्मवीर भारती के कथा–साहित्य का साहित्यिक–अनुशीलन" विषयक शोध कार्य करने का निश्चय किया। भारती जी के कथा–साहित्य में अद्वितीय कलादृष्टि और संशलिष्ट प्रभाव की सम्प्रेषणीयता है। भारती जी अपने बोध को स्वस्थ, समन्वित और समग्र रूप में प्रस्तुत करते थे। यही मेरी चित्तवृत्ति के आकर्षण का कारण भी है। इसीलिए मैंने शोध का विषय उनके कथा–साहित्य को चुना।

हिन्दी क्षेत्र के किसी पाठक का अपने कैशोर्य में जिस एक कृति से पहला परिचय होता है, वह मेरे लिए धर्मवीर भारती का उपन्यास गुनाहों का देवताश था। उम्र के उस रुमानी दौर में, जब आँखों में रंगीन सपने झिलमिलाते हैं, इस कृति का जादू पाठक को पूरी तरह मोहित–सम्मोहित कर लेता है। लेकिन जैसे–जैसे वह प्रौढ़ होता जाता है और उसकी समझ का दायरा बढ़ता जाता है तो सूरज का सातवां घोड़ा भविष्य के सपने और वर्तमान के नवीन आंकलन भेजता है और ग्यारह सपनों का देश मध्यवर्गीय परिवार का चित्र उपस्थित करता है। बन्द गली का आखिरी मकानश, चाँद और टूटे हुए लोग जैसी तमाम कहानियों के माध्यम से उसका एक अन्य धर्मवीर भारती से साक्षात्कार होने लगता है।

अध्ययन का उद्देश्य

1ण उपन्यास से लोकप्रिय धर्मवीर भारती का आजादी के बाद के साहित्यकारों में विशिष्ट स्थान

2ण उपन्यास तत्कालीन समाज का युग की परिस्थितियों तथा जनजीवन के चित्रण का सर्वश्रेष्ठ साधन

कहानी संग्रह स्वरूप –

साहित्य जीवन का प्रतिबिम्ब है। जीवन के विविध व्यापार, क्रिया–कलाप एवं घात–प्रतिघात मानव– हृदय को उद्वेलित करके जिन रागात्मक अनुभूतियों को जन्म देते हैं उन्हीं की शब्दार्थमयी अभिव्यक्ति साहित्य है। इस अभिव्यक्ति के अनेक रूप हैं जिनमें से कहानी भी एक है।

कहानी का जन्म कब हुआ, यह बताना कठिन है, कहानी कहने और सुनने की प्रवृत्ति मनुष्य में जन्मजात है। कहानी या कथा का अर्थ श्कहनाश है, अर्थात् जो कुछ कहा जावे वह कहानी है। इसलिये कहा जा सकता है कि मनुष्य ने जब से बोलना सीखा, कहानी का जन्म उसी समय से हुआ। संसार के समस्त प्राचीन साहित्य में कहानी का रूप मिलता है। मनुष्य की जिज्ञासा और कौतूहल से कथा का जन्म हुआ। रहस्यमयी प्रकृति, उसकी मनोहरी छटा और जगत् के कार्य व्यापार ने मनुष्य के मन में जिज्ञासा कौतूहल और आश्चर्य के भाव भरे। वह इसके पीछे कौन सी रहस्यमय शक्ति है ? यह जानने की चेष्टा करने लगा। जैसे–जैसे उसकी बुद्धि का विकास हुआ, प्रकृति के रहस्य खुलते गये उसके मन में कौतूहल का भाव बढ़ता गया, उसकी जिज्ञासा और कौतूहल के भाव वेदों की स्तुतियों में देखने को मिलते हैं, जिनमें कहानी के बीज देखे जा सकते हैं।

कथा या कहानी के प्रति मनुष्य की शुरु से ही अर्थात् आदिम काल से ही अत्यधिक रुचि और उत्सुकता रही है। कहानी सुनना और सुनाना उसकी जन्मजात प्रवृत्ति है इसलिए वह उसके प्रति सजग भी रहा है। आदिमकाल में जब आज के जैसे मनोरंजन के आधुनिक साधन नहीं थे, जब दिनभर काम कर के थका–मांदा व्यक्ति जब घर लौटता था तब भोजनादि धर्मवीर भारती की कहानियाँ बहुत अधिक नहीं हैं, पर हैं महत्वपूर्ण । निर्मल वर्मा लिखते हैं दृ "उत्तर–पूर्वी भारत की कस्बायी जीवन का ताना बाना जितने महीन रेशों से भारती ने अपने कथा–विन्यास में बुना है, उतना शायद ही किसी समकालीन हिन्दी लेखक ने।

धर्मवीर भारती की कहानी में असली आधुनिकता को खोजा और पाया जा सकता है। यह पश्चिम की नकली आधुनिकता से अलग है। यह आधुनिकता सत्य के आलोक में प्रकाशित हो रही है। भारती जी का संपूर्ण कथा संग्रह इसका प्रमाण है। हम उनके कथा संग्रह का संक्षिप्त विवेचन इस प्रकार कर सकते हैं चाँद और टूटे हुए लोग –भारती जी का यह संग्रह सन् 1955 में प्रकाशित हुआ था। चाँद और टूटे हुए लोगश में नौ कहानियाँ नई है, शेष सोलह पूर्ववर्ती संग्रहों से ली गई हैं। इनमें हरिनाकुस का बेटा महत्वपूर्ण कहानी है जो श्गुलकी बन्नोश की पूर्व सूचना देती है। मनुष्यों को फाँसी लगाने वाले हरिनाकुस की पेशेवर बाध्यता एक ओर है तो मनुष्यता दूसरी ओर। मनुष्य की ऊपरी निर्ममता और कठोरता के कवच

को भेद कर किसी तरह उसके भीतरी देवता के दर्शन कराना प्रसाद जी का एक वैशिष्ट्य था दृ भारती प्रसाद जी को अपनी श्रद्धा अर्पित करते थे तो शायद इस वैशिष्ट्य के कारण। समाज में स्वीकृत नारी का एक रूप और उसके भीतरी असली रूप के बीच का अन्तर कुलटा में दिखाते हुए भारती जी ने उसके अपार वात्सल्य के दर्शन कराए हैं।

हरिनाकुस और उसका बेटा प्रस्तुत कहानी में भारती जी ने एक जल्लाद पिता के अपने पुत्र के प्रति हृदय परिवर्तन को दिखाया है। कहानी में जल्लाद है जो कुरूप, क्रूर व निर्दयी है। उसकी धाक बिरादरी में है। वह अपने बेटे को हुनर में पारंगत करना चाहता था। इसलिए वह उसे लेकर एक दिन फांसी दिखाने अपने साथ ले गया। फांसी का वह दृश्य देखकर बिस्सू डर गया। रात को सोते सोते भी वह डर जाता था। अपने पिता के पास जाने से भी वह डरने लगा। एक दिन जल्लाद ने एक युवा को फांसी दी। युवा की निडरता को देखकर उस देशभक्त की भक्ति देखकर जल्लाद के मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। वह ताड़ी पीकर हर किसी को यह कहानी सुनाया करता था। अपने बेटे को सुअर के पास बैठा देखकर जल्लाद अपने पर काबू न पा सका और उसने बेटे की खूब पिटाई की। जल्लाद की बहन ने समझाया कि दिनभर आवारा न घूमने देकर बच्चे को स्कूल भेजा जाए। जब जल्लाद का नशा उतरा तो वह घर लौटा। बेटे के प्रति उसका मन वात्सल्य से भर गया और हृदय परिवर्तन हो गया। उसने बिस्सू से कहा नहीं बेटे ! तू क्यों जल्लाद बनेगा ? मेरा बेटा बड़ा आदमी बनेगा। हरिनाकुस का बेटा जल्लाद था, मेरा बेटा बिसुआ है।श और पास खींच कर प्यार से बोला कल से तू स्कूल जाना, अच्छा।

जल्लाद पिता की पेशेवर बाध्यता एक ओर है, तो उसकी मनुष्यता दूसरी ओर। निर्ममता, कठोरता के ऊपर वात्सल्य की जीत होती है। इस प्रकार यह कहानी हृदय परिवर्तन को चित्रित करती है।

काले मेघा पानी दे

उन लोगों के दो नाम थे–इंदर सेना या मेढक–मंडली। बिलकुल एक–दूसरे के विपरीत। जो लोग उनके नग्नस्वरूप शरीर, उनकी उछलकूद, उनके शोर–शराबे और उनके कारण गली में होनेवाले कीचड़ काँदो से चिढ़ते थे, वे उन्हें कहते थे मेढक–मंडली। उनकी अगवानी गालियों से होती थी। वे होते थे दस–बारह बरस से सोलह–अठारह बरस के लड़के, साँवला नंगा बदन उउउ सिर्फ एक जाँघिया या कभी–कभी सिर्फ लंगोटी। एक जगह इकट्ठे होते थे। पहला जयकारा लगता था, बोल गंगा मैया की जय। जयकारा सुनते ही लोग सावधान हो जाते थे। स्त्रियाँ और लड़कियाँ छज्जे, बारजे से झाँकने लगती थीं और यह विचित्र नंग–धडंग टोली उछलती–कूदती समवेत पुकार लगाती थीः काले मेघा पानी दे गगरी फूटी बैल पियासा पानी दे, गुड़धानी दे काले मेघा पानी दे।

उछलते–कूदते, एक–दूसरे को धकियाते ये लोग गली में किसी दुमहले मकान के सामने रुक जाते, "पानी दे मैया, इंदर सेना आई है।ष और जिन घरों में आखीर जेठ या शुरू आषाढ़ के उन सूखे दिनों में पानी की कमी भी होती थी, जिन घरों के कुएँ भी सूखे होते थे, उन घरों से भी सहेज कर रखे हुए पानी में से बाल्टी या घड़े भर–भर कर इन बच्चों को सर से पैर तक तर कर दिया जाता था। ये भीगे बदन मिट्टी में लोट लगाते थे, पानी फेंकने से पैदा हुए कीचड़ में लथपथ हो जाते थे। हाथ, पाँव, बदन, मुँह, पेट सब पर गंदा कीचड़ मल कर फिर हाँक लगाते "बोल गंगा मैया की जय और फिर मंडली बाँध कर उछलते–कूदते अगले घर की ओर चल पड़ते बादलों को टेरते, ष्काले मेघा पानी दे। वे सचमुच ऐसे दिन होते जब गली–मुहल्ला, गाँव–शहर हर जगह लोग गरमी में भुन–भुन कर त्राहिमाम कर रहे होते, जेठ के दसतपा बीत कर आषाढ़ का पहला पखवारा भी बीत चुका होता पर क्षितिज पर कहीं बादल की रेख भी नहीं दीखती होती, कुएँ सूखने लगते, नलों में एक तो बहुत कम पानी आता और आता भी तो आधी रात को भी मानो खौलता हुआ पानी

कुलटा –

इस कहानी की प्रमुख स्त्री पात्र 25–30 वर्ष की युवती है, जिसका नाम लाली है। लाली का पति नंदराम है जो कि एक घड़ीसाज है। नंदराम की उम्र 45 की थी और उसके पहले पत्नी से दो बच्चे थे, जो लाली से नफरत करते थे। आस–पड़ोस वाले लाली को हमेशा दुश्चरित्र समझते हैं तथा उसे संदेह की दृष्टि से देखते हैं। लाली एक दिन लेखक से लिफाफा मांगने आती है। परन्तु लेखक उसे डांटकर भगा देता है। नंदराम भी अक्सर उसके साथ गाली–गलौज करता है। तथा उसे मारता–पीटता है। नंदराम लाली को पत्र लिखने के लिए मना करता है। लाली नहीं मानती तो वह उसे पीटता है।

और फिर एकाएक ऐसा कुछ घंटे कि उन सारी परिचित चीजों को आप दूसरे की नजर से देखें, चाहे वह आपका हमशहरी ही क्यों न हो, तो भी नयी तरह की अनुभूति का अहसास अलग ढंग से आपके शहर का परिचय आप से करवाता है। भारती जी की कहानियों को पढ़ते हुए, अपने शहर से गुजरते हुए जिस सुख का अनुभव होता है उसको असंख्य पाठकों ने मेरी तरह महसूस किया होगा। चाँद और टूटे हुए लोग, बंद गली का आखिरी मकान एवं गुलकी बन्नो कहानियों में इलाहाबाद महुवे की तरह महकता है।

उपन्यास और समाज

उपन्यास तत्कालीन समाज का युग की परिस्थितियों तथा जनजीवन के चित्रण का सर्वश्रेष्ठ साधन तथा माध्यम है। उपन्यास में जीवन–गत सत्य की अवतारणा ठीक–ठीक संभव है। उपन्यास अपने एक कलेवर में मानव–जीवन की सम्पूर्णता तथा समग्रता को हर दृष्टि से अभिव्यक्ति प्रदान कर सकता है। उसमें समाज के किसी सदस्य के सौ वर्ष के जीवन की घटनाएं, अनुभूतियां, सुख–दुख समाहित हो सकते हैं और केवल एक दिन या रात या इनका एक भाग–एक घंटे की क्रियाओं तथा प्रति–क्रियाओं से भी उपन्यास पूरा हो सकता है। एक उपन्यास में मानव जीवन का पूरा चित्र उतारा जाता है।

"उपन्यास में जीवनगत सत्य की पूर्ण अवतारणा होती है। उपन्यास में मानव जीवन का तटस्थ वर्णन मिल जायेगा, जीवन की आलोचना के दर्शन हो जायेंगे और भावी जीवन निर्माण के लिए कलात्मक सुझावों द्वारा संकेत मिल जायेंगे। हम समाज में कई कुरीतियों या बातों को होते प्रायः देखते है, अनुभव करते हैं, पर कह नहीं पाते। स्पष्ट चिन्तन का आभाव अभिव्यक्ति में बाधा बनता है, पर उपन्यास में इन सबका सच्चा वर्णन देख सकते हैं।

उपन्यास समसामयिक समाज का सबसे बड़ा दर्पण है। इस दृष्टि से यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण साहित्य विधा है। इसमें न तो नाटक की भांति पर–निर्भरता है, और न ही कविता की भांति अनेक बाह्य तथा कृत्रिम बन्धनों की जकड़न है। वस्तुतः उपन्यास तत्कालीन समाज का, युग की परिस्थितियों तथा जन जीवन के चित्रण का सर्वश्रेष्ठ साधन तथा माध्यम है। उपन्यास की परिभाषाएं अंग्रेजी में नॉवेल शब्द इतालवी के नॉविला शब्द से व्युत्पन्न हुआ है जो समाचार (छमू) का समानार्थी है। यह एक नवीन प्रकार की वर्णानात्मक कथा है जो आधुनिक और सत्य दोनों होने का दावा करती है।

'उपन्यास' शब्द का मूल अर्थ है शनिकट रखी हुई वस्तुश (उपन्यास) उपन्यास की व्याख्या है उपन्यासः प्रसादनमश अर्थात् उपन्यास पाठकों को प्रसन्न करे। प्राचीनकाल में पौराणिक कथाओं द्वारा मनोरंजन किया जाता था। आज भी उपन्यास का अनिवार्य धर्म मनोरंजन अथवा आनंद प्रदान करना है। दूसरी व्याख्या है उपपत्ति कृतोध्यार्थः उपन्यासः प्रकीर्तितः अर्थात् किसी अर्थ को युक्ति युक्त या युक्तिसंभव रूप में उपस्थित करना ही उपन्यास कहा जाता है।

न्यू इंग्लिश डिक्शनरी के अनुसार उपन्यास एक लम्बे आकार की काल्पनिक कथा का प्राकथन है, जिसमें पात्र और क्रियाएं कथानक में इस रूप में चित्रित की जाती हैं कि वे वास्तविक जीवन को प्रतिरुपित करती हुई प्रतीत होती हैं।

डॉ. श्याम सुन्दर दास जी ने उपन्यास को मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा कहा है। उपन्यास साहित्य का एक रूप है और साहित्य, भाषा के माध्यम से जीवन और जगत् की अभिव्यक्ति।

श्री क्षेमेन्द्र सुमन जी ने लिखा है "वस्तुतः उपन्यास मानव जीवन की आंतरिक और बाह्य परिस्थितियों का, उसके मन के संघर्ष–विघर्ष का, उसके चारों ओर के वातावरण और समाज का एक काल्पनिक कथा चित्र है, किन्तु काल्पनिक होता हुआ भी वह यथार्थ है, उसमें जीवन के सत्य की अभिव्यक्ति होती है।

प्रेमचन्द के शब्दों में मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र मानता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व हैं।

हम कह सकते हैं कि उपन्यास अपने युग के समाज की नाड़ियों का स्पन्दन होता है। उसमें व्यक्ति, उसके विचार (सामाजिक संदर्भो में), समाज उसकी प्रथाएं, परम्पराएं, चेतना आदि का सजग चित्रण मिलता है।

इस प्रकार अनेक विद्वानों ने अनेक रूपों में उपन्यास को परिभाषित किया है। परन्तु कोई परिभाषा अपने आप में पूर्ण नहीं है। किसी में किसी पक्ष पर बल दिया गया है तो किसी–में–किसी पक्ष पर। हम संक्षेप में कह सकते हैं कि उपन्यास वह साहित्यिक विधा है, जिसमें मानव–जीवन के विविध पक्षों को यथार्थ रूप में प्रतिरुपित किया जाता है और साथ ही लेखक के समसामयिक जीवन का भी परिचय प्राप्त हो जाता है। यद्यपि वह गद्यात्मक काल्पनिक कथा है, तथापि वह यथार्थ जीवन के विविध पक्षों को इस प्रकार अभिव्यक्त करता है कि जीवन और जगत् की विशेषताएं स्पष्ट हो जाती हैं। वर्तमान युग के कम ही साहित्यिक कलाकार हैं जिनका एक साथ कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, आलोचना, निबंध, पत्रकारिता इत्यादि विधाओं पर समान अधिकार हो। धर्मवीर भारती जी ने दो उपन्यासों को लिखकर लेखकीय ने परम्परा एवं नवीन दृष्टि का सम्यक् परिचय दिया है। गुनाहों का देवता तथा श्सूरज का सातवां घोड़ा उनके दो प्रकाशित एवं बहुचर्चित उपन्यास हैं। गुनाहों का देवता, मध्यमवर्गीय जीवन की यथार्थता, मूल्य–संकट, पारिवारिक संत्रास, मानसिक ऊहापोह इत्यादि का दिग्दर्शन कराता है तो सूरज का सातवां घोड़ा नवीन शैली में नये धरातल की सूचना देता है। दोनों ही उपन्यासों में अनेक प्रयोगात्मक स्थितियों का बोध होता है। दोनों रचनाओं में भारती जी का काव्य पक्ष (भावुक व्यक्तित्व) सर्वत्र विद्यमान है।

गुनाहों का देवता

गुनाहों का देवताश सन् 1949 ई. में लिखा गया भारती जी का पहला उपन्यास है जो प्रेम के एक सहज मानवीय रूप को प्रस्तुत करता है।

गुनाहों का देवताश नयी पीढ़ी के पाठकों के निकट इतना प्रिय बन सका क्योंकि इसमें अपेक्षाकृत जिन उलझी संवेदनाओं का चित्रण हुआ है, वह मूलतः मानवीय है। गुनाहों के देवताश कथाकृति के रूप में अप्रौढ़ होने पर भी साख्य का प्रियतर आख्यान है।

उपन्यास की नायिका है सुधा और नायक है चंदर। सुधा, दूज के चाँद–सी मासूम, हरिण की भोली आँखों–सी निष्पाप युवती है। उसकी कुंवारी सांसों का देवता है चन्दर (चन्द्रकुमार कपूर) जो प्रयाग विश्वविद्यालय में प्रथम श्रेणी का विद्यार्थी रहा है और अब रिसर्च स्कॉलर है। चन्दर के ऊपर उसके सीनियर टीचर डाक्टर शुक्ला का बड़ा स्नेह है और वह उनके परिवार का सदस्य सा हो गया है। डॉक्टर शुक्ला की एक मात्र कन्या सुधा आठवीं कक्षा से ही चन्दर के स्नेह–शासन में रही और वह अनायास उसके अनुराग में रंग उठी है। चन्दर के साथ हँसते–खेलते, लड़ते–झगड़ते, रीझते, चन्दरमय हो उठी है, चन्दर भी सुधा को बहुत प्यार करता है। वह डॉक्टर शुक्ला तथा सुधा के निश्चल विश्वास एवं सहज स्नेह से एक गौरव का अनुभव करता हुआ अपने प्रेम को बहुत ऊँचाई पर रखता है। जाति व्यवस्था, कुल

मर्यादा, विवाह सम्बन्ध आदि के विषय में डॉक्टर के विश्वास पुराने हैं। चन्दर को निबन्ध टाइप कराने के लिए शुक्ला जी पम्मी के पास भेजते हैं। जहाँ उसकी मुलाकात पम्मी के पागल भाई बंटी के साथ होती है। पम्मी दिखने में बहुत सुन्दर है, चन्दर उसे देखने के बाद सोचने लगता है कि यह लड़की जो व्यवहार में इतनी सरल और स्पष्ट है, फैशन में इतनी नाजुक और शौकीन है, काम करने में उतनी ही मेहनती और तेज भी है।

सुधा की बी.ए. की पढ़ाई खत्म होते–होते उसके विवाह की बातें होने लगती है, तब उसकी बुआ और बेटी बिनती घर में आती है। शादी के लिए लड़के की फोटो लाई जाती है, लड़के का नाम है कामरेड कैलाश मिश्र। चन्दर के दिमाग में बरेली की बातें, लाठी–चार्ज सभी कुछ घूम गया। चन्दर के मन में इस वक्त जाने कैसा लग रहा था। कभी बड़ा अचरज होता कभी एक सन्तोष होता कि चलो सुधा के भाग्य की रेखा उसे अच्छी जगह ले गयी, फिर कभी सोचता कि मिश्र इतने विचित्र स्वभाव का है, सुधा की उससे निभेगी या नहीं ? फिर सोचता, नहीं सुधा भाग्यवान है। इतना अच्छा लड़का मिलना मुश्किल था। बिनती उत्सुकता से पूछती है आप इन्हें जानते हैं ? हाँ, बिनती। पलकों में आये हुए आँसू रोककर और होंठो पर मुस्कान लाने की कोशिश करते हुआ बोला दृ "मैं सोच रहा हूँ, आज कितना सन्तोष है मुझे, कितनी खुशी है, मुझे कि सुधा एक ऐसे घर जा रही है जो इतना अच्छा है, ऐसे लड़के के साथ जा रही है जो इतना ऊँचा ..... कहते कहते चन्दर की आँखें भर आयीं।'

जब सुधा को लड़के का फोटो चन्दर दिखलाता है तब सुधा कहती है तुम्हारी जुबान न हिली कैसे ? शरम नहीं आयी तुम्हें ? हम कितना मानते थे पापा को, कितना मानते थे तुम्हें ! हमें यह नहीं मालूम था कि आप लोग ऐसा करेंगे। तब चन्दर का हाथ तैश में उठा और एक भरपूर तमाचा सुधा के गाल पर पड़ा। सुधा के गाल पर नीली उँगलिया उभर आयीं। वह स्तब्ध ! जैसे पत्थर बन गयी हो।

चन्दर ने सिर उठाया और कहा दृ श्सुधा हमारी तरफ देखो सुधा ने सिर ऊपर उठाया। चन्दर बोला हम दोनों एक दूसरे की जिन्दगी में क्या इसीलिए आये कि एक दूसरे को कमजोर बना दें या हम लोगों ने स्वर्ग की ऊँचाइयों पर साथ बैठकर आत्मा का संगीत सुना सिर्फ इसलिए कि अपने ब्याह की शहनाई में बदल दें सोने की पहचान आग में होती है न ! लपटों में अगर उसमें निखार न आये तभी वह सच्चा सोना है। सचमुच मैंने तुम्हारे व्यक्तित्व को बनाया है या तुमने मेरे व्यक्तित्व को बनाया है, यह तो तभी मालूम होगा जबकि हम लोग कठिनाइयों से, वेदनाओं से, संघर्षों से खेले और बाद में विजयी हों और तभी मालूम होगा कि सचमुच मैंने तुम्हारे जीवन में प्रकाश और बल दिया था। अगर सदा तुम मेरी बाँहों की सीमा में रहीं और मैं तुम्हारी पलकों की छांव में रहा और बाहर के संघर्षों से हम लोग डरते रहे तो कायरता है। और मुझे अच्छा लगेगा कि दुनिया कहे कि मेरी सुधा, जिस पर मुझे नाज था,वह कायर है ? बोलो ! तुम कायर कहलाना पसन्द करोगी

सुधा अपने को संयमित कर लेती है। चन्दर सुधा को समझाता है कि अपना ख्याल रखे तो सुधा कहती है मैं दो–तीन दिन में ठीक हो जाऊँगी! तुम घबराओ मत। मैं मृत्यु–शय्या पर भी होऊँगी तब भी तुम्हारे आदेश पर हँस सकती हूँ

धर्मवीर भारती के कथा–साहित्य का वैशिष्ट्य :

कथा साहित्य को आम लोगों के दुःख–सुख से जोड़ने के। सिलसिले में गांव–शहर, कस्बा दृगली और दुकान–मकान की जो कहानियाँ आयी है उनमें भारती जी की श्बंद गली का आखिरी मकानश का विशेष महत्त्व है, जो सहमे, घुटे लोक जीवन का प्रमाणिक दस्तावेज है। इस प्रकार सील से भरे घर, टूटे मन, अंदर–बाहर अंधकार, हर चीज का कुढ़न, गलियों के टूटे रिश्ते, आम आदमी की रहाइसि को गहराई से चित्रित करने वाले मात्र चार लंबी कहानियों का संग्रह श्बंद गली का आखिरी मकानश हिन्दी साहित्य में विशिष्ट स्थान का अधिकारी है।

भारती जी ने अपने पात्रों को यथार्थ जीवन से चुना है और उसी यथार्थता से उन्हें प्रस्तुत भी किया है। उनके कथा साहित्य के पात्रों में अपूर्व सप्राणता ही नहीं यथार्थ की गहरी पकड़ भी परिलक्षित होती है। भारती जी की कहानियों में उनके पात्र एवं स्थितियां यथार्थ जीवन के लोगों एवं स्थितियों की स्थानापन्न बनकर ही उभरी हैं। यही कारण है कि वे हमारे जीवन के विभिन्न रंगों के सजीव एवं यथार्थ चित्रण प्रतीत होते हैं और उद्वेलित करते हैं।

भारती जी का कथा साहित्य अनुराग मन का पाठ है, जिसमें प्रेम का स्थान प्रथम है। अपनी कहानियों के माध्यम से उन्होंने समाज को नई प्रेरणा दी है। श्गुलकी बन्नोश कहानी में गुलकी की पीड़ा व्यक्तिगत न होकर पाठक की पीड़ा हो जाती है। सावित्री नंबरश दो कर्त्तव्य बोध का पाठ पढ़ाती हैं, पर अंत में पीड़ा की अनुभूति छोड़ जाती है। ष्यह मेरे लिए नहींश जीवन का यथार्थ प्रस्तुत करती है। श्कुलटाश कहानी में स्त्री के प्रति सामाजिक नजरिये को यथार्थ के साथ प्रस्तुत किया गया है।

भारती जी ने आधुनिक समाज के मध्य वर्ग के पात्रों की यथार्थवादी आधार भूमि पर मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। जहाँ जल्लाद जैसे निम्न स्तर के पात्र से लेकर उच्चतम स्तर के पात्रों को कथा साहित्य में स्थान मिला है। फिर भी हम कह सकते हैं कि उनके साहित्य में सामान्यतः मध्य वर्ग एवं निम्न वर्ग के पात्र भी अधिक हैं। उन्होंने भारतीय समाज में नारी की दशा एवं दिशा को यथार्थ अभिव्यक्ति प्रदान की है। पात्रों का भारती जी के कथा साहित्य की प्रमुख विशेषता है लोक जीवन की व्यथा कथा एवं दबे घुटे दर्दीले वातावरण का जीवंत चित्रित, धर्मवीर भारती के कथा–साहित्य का वैशिष्ट्य चित्रण इस प्रकार है कि पाठकों की सहानुभूति उन्हें सहज ही मानव–जीवन के प्रतिबिंब होते हैं अतएव उनकी बातचीत की प्राप्त हो जाती है।

कसौटी भी मानव की बातचीत ही होती है किसी भी उपन्यास की सफलता के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है। उनकी कहानी श्सावित्री नंबर दोश में सावित्री की पीड़ा एक नये कोण से उठती है–शरीर की पीड़ा बनाम मन की पीड़ा। इस लेखक की टिप्पणी संकेत तथा पात्र के कथन भी इस दृष्टि से कहानी में क्षयग्रस्त सावित्री भारतीय नारी के पवित्रता बोध के उल्लेख्य हैं। संबंध विच्छेद अथवा पारिवारिक जीवन में जो एक संदर्भ में साक्षात व्यंग्य जैसा चित्रित है।

प्रकार की खंडनात्मक स्थिति पनप रही है उसके लिए काफी अर्थों में समाज को दोषी ठहराया गया है दृ पर्याप्त समय में भारती जी के उपन्यासों के पात्र सजीव हैं और सहसा ही प्रचलित मान्यताएं जीर्ण–शीर्ण (समय स्थिति विपरीत) होने पर मानवीय अस्थिमज्जा में पाठक के सम्मुख आ खड़े होते हैं। उनका अंधानुकरण कहाँ तक न्यायसंगत है, विचारणीय समस्या श्गुनाहों के देवताश में आधार स्तंभ चन्दर तथा सुधा दो पात्र हैं। है। डॉ. शुक्ला का भी इसी प्रकार का अभिमत है –ष्सुधा का भारती जी ने दोनों पात्रों के माध्यम से मध्यवर्गीय युवकों और विवाह कितनी अच्छी जगह किया गया, मगर सुधा पीली पड़ गई युवतियों का स्वरूप उद्घटित कर उनके चरित्र में तथाकथित है। कितना दुःख हुआ देखकर और बिनती के साथ यह हुआ।4 उदात्ता लाने हेतु उनसे बहुत कुछ करवाया है। गेसू और बंटी एक गौण और सामान्य चरित्र है। अन्य पात्र में सुधा, पम्मी, भारती जी के उपन्यास श्सूरज का सातवां घोड़ाश में माणिक मुल्ला डॉक्टर शुक्ला आदि हैं।

की भंगिमाओं का वर्णन है, वह वार्तालाप करता है, अपने शब्दों में उनके सामान्य निष्कर्ष प्रस्तुत करता है, बीच–बीच में टिप्पणी भी श्सूरज का सातवां घोड़ाश उपन्यास में मुख्य पात्र माणिक मुल्ला करता है और उनसे सुनी कहानी को अपने शब्दों में व्यंग्य द्वारा है। माणिक मुल्ला कमोवेश सभी कहानियों में विद्यमान है। वह धारदार बनाते हुए प्रस्तुत करता है। कहानियों का श्रावयिता भी है। वह मध्य वर्ग का प्रतिनिधि पात्र होने के साथ समाज की झूठी मर्यादा, रीति–रिवाज, जाति प्रथा भारती जी ने संवाद रूप में टिप्पणियों को प्रस्तुत कर कथा को तथा आर्थिक विषमता के प्रति क्रूद्ध भी है।

कार्य प्रणाली

धर्मवीर भारती प्रयोगशील नयी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। वे सप्तक परंपरा में " दूसरा सप्तक " के कवि हैं। अपने आस – पास की दुनिया के चित्रण की अपेक्षा भारती निजी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति अधिक करते है। डॉ . अरूण कुमार लिखतें हैं दृ " नई कविता के स्वरूप – गठन में इनका महत्वपूर्ण योगदान है। "सात गीत वर्ष " के पूर्व उनकी कविताओं में कौशोर्य की कोमल

कल्पनाएँ हैं और जन – सामीप्य प्राप्त करने का विरल इच्छा थी। उसके बाद की कविताओं में राग का सरस स्वर है। बीच की कविताएँ विराग की नहीं वरन् विद्रोह मन की है उनकी संपूर्ण रचनाएँ उनके सतरंगे स्वप्नों को उजागर करती है। वस्तुतः धर्मवीर – भारती की कविता में नयी कविता के विकास के सभी पंडावों की छाप हैं।

डेटा विश्लेषण

धर्मवीर भारती की नाट्यात्मक रचना है – " अन्धायुग " । उनका " नदी प्यासी थी " शीर्षक एक एकांकी संकलन भी है। " अन्धायुग " कविता के माध्यम से प्रस्तुत एक नाटक है जिसे गीति – नाट्य माना जाता है। आधुनिक हिन्दी साहित्य में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। " अन्धायुग " के प्रकाशन के बाद ऐसी अनेक कृतियाँ आयी हैं – जैसे अग्निलीक भारतभूषण अग्रवाल , सूखा सरोवर लक्ष्मीनारायण लाल संशय की एक रात , नरेश मेहता एक कंठ विषपायी , दुष्यंत कुमार।

अन्धायुग

' अन्धायुग ' का रचनाकाल 1954 है। यह कृति भारती की विशेष मानसिक अवस्था के एक विशिष्ट क्षण की अनुभूति का परिणाम है। उन्हीं के शब्दों में " अन्धायुग " कदापि ने लिखा जाता यदि उसका लिखना – न लिखना मेरे बस की बात रह गई होती। इस कृति का पूरा जटिल वितान जब मेरे अन्तर में उभरा तो मैं असमंजय में पड़ गया। थोड़ा डर भी लगा। लगा कि इस अभिशप्त भूमि पर एक कदम भी रक्खा कि फिर बच कर नहीं लौटूंगा। ऐसी निरासपूर्ण मानसिकता के रूपायन में रचनाकाल का प्रभाव सर्वप्रमुख है।

उपसंहार

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि भारती जी के उपन्यासों तथा कहानियों के सारे पात्र उनके मोहल्ले और गली से निकले थे यह सच वह स्वीकार करते थे। उनकी तस्वीरकशी में भारती जी ने यथार्थ का सहारा लिया। जो जैसा था, उसका खाका वैसा खींचा। भारती जी के उस प्रेम ने, जो उन्हें अपने परिवेश से था, जो अंकुर बन बार–बार किरदारों के दिल में मानवता के रूप में फूटा, जो पात्र को पारदर्शिता ही नहीं, तरलता भी प्रदान करता है, उनमें मुहावरों तथा कहावतों का विशेष योगदान रहा है। भारती जी की भाषा चित्रोपम है। बोलचाल के शब्दों, प्रचलित मुहावरों, शब्दों के कुशल चयन एवं अभिनव वाक्य विन्यास से उनकी भाषा अत्यन्त प्रभावशाली हो गयी है, जो एक कवि की भाँति छोटे–छोटे मधुर काव्यात्मक चित्र उपस्थित करती चलती है और अलग रूप–विधानों का निर्माण करती है जो अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बनकर उभरती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1ण अश्क उपेन्द्रनाथ, रेखाएँ एवं चित्र, नीलम प्रकाशन, इलाहाबाद, 1955

2ण अश्क उपेन्द्रनाथ, हिन्दी कहानी एक अन्तरंग परिचय, नीलम प्रकाशन, इलाहाबाद

3ण गुप्ता एम.एल., शर्मा डी.डी., यूनीफाइड समाज एक परिचय, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 2004

4ण चतुर्वेदी रामस्वरूप, समकालीन हिन्दी साहित्य–विविध परिदृश्य, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, 2000

5ण जायसवाल अमर, हिन्दी लघु उपन्यास, विद्याविहार गांधी नगर, कानपुर, 1984

6ण जैन रवीन्द्र कुमार, उपन्यास सिद्धान्त और संरचना, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1972

7ण झा कौशलेन्द्र, कथा भारती (कहानी संकलन), मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 1987

8ण टंडन प्रेमनारायण, भाषा अध्ययन के आधार, हिन्दी साहित्य भ ंडार, लखनऊ, 1958

9ण तिवारी बालेन्दु शेखर, हिन्दी शब्द शक्ति और पारिभाषिक शब्दावली, अभिषेक अवतंस, क्लासिक पब्लिक, नयी दिल्ली, 2005

10ण त्यागी साधना, धर्मवीर भारती समग्र, वैभव प्रकाशन, रायपुर, 2008

11ण दीक्षित राधाकृष्ण, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में राष्ट्रवाद, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004

12ण 'निर्मम' हेमराज, हिन्दी उपन्यासों में मध्यवर्ग, विभू प्रकाशन, साहिबाबाद, 1978